International Journal of Applied Research 2023; 9(5): 78-81

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2023; 9(5): 78-81
www.allresearchjournal.com
Received: 15-02-2023
Accepted: 18-03-2023

सुनील कुमार गुप्ता
शोध छात्र शिक्षा, अवधेश प्रताप सिंह वि.वि., रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

डॉ. पतंजलि मिश्र
प्राचार्य, आदर्श शिक्षा महाविद्यालय, पुरैना, जिला रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
सुनील कुमार गुप्ता
शोध छात्र शिक्षा, अवधेश प्रताप सिंह वि.वि., रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्रों के विद्यालयीन समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन

सुनील कुमार गुप्ता, डॉ. पतंजलि मिश्र

सारांश
प्रस्तुत शोध पत्र रीवा जिले में शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्रों के विद्यालयीन समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन पर आधारित है। न्यादर्श के रूप में रीवा जिला के रीवा विकासखण्ड से 4 और सभी विकासखण्डों से 2–2 विद्यालय कुल 20 माध्यमिक विद्यालयों का चयन दैव निदर्शन द्वारा अध्ययन हेतु लिया गया। शोध कार्य के लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु गहन अध्ययन करने के लिए न्यादर्श के रूप में चयनित विद्यालयों से 500 छात्र एवं छात्राओं (250 छात्र + 250 छात्रा) का चयन दैव निदर्शन पद्धति से किया गया है। रीवा जिले के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्रों के विद्यालयीन समायोजन में सार्थकता का औसत उपलब्धि 55.32 है तथा मानक विचलन 16.85 है और छात्राओं के विद्यालयीन समायोजन में सार्थकता का औसत उपलब्धि 54.92 है तथा मानक विचलन 16.15 है। शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्रों के विद्यालयीन समायोजन में सार्थकता का औसत उपलब्धि 44.25 है तथा मानक विचलन 12.05 है और ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों के विद्यालयीन समायोजन में सार्थकता का औसत उपलब्धि 40.08 है तथा मानक विचलन 11.68 है।

कूटशब्दः रीवा जिला, शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र, माध्यमिक स्तर के विद्यालय, छात्र, विद्यालयीन समायोजन

1. प्रस्तावना
सम्पूर्ण शैक्षणिक प्रक्रिया में माध्यमिक शिक्षा का प्रमुख स्थान है। माध्यमिक विद्यालय शैक्षणिक संस्थाओं की श्रृंखला में मध्य की महत्वपूर्ण कड़ी है। देश में स्वतंत्रता के बाद शैक्षणिक सुविधाओं का द्रुतगति से विस्तार हुआ है। देश के प्रत्येक राज्य में असंख्य विद्यालयों का पंजीकरण हुआ है। स्वतंत्रता के समय प्रत्येक जनपद में जहाँ पर 10–12 इण्टरमीडियट कॉलेज नहीं थे वहाँ पर स्वतंत्रता के कुछ वर्षों के बाद इनकी संख्या में अत्यधिक वृद्धि हुई है। विद्यालय की संख्या बढ़ने पर अन्य सुविधाओं की कमी हुई है, जैसे शिक्षण का निम्न स्तर, छात्रों की संख्या में वृद्धि, कुशल एवं प्रशिक्षित अध्यापकों की कमी, भवनों की कमी, भौतिक सुविधाओं की अपर्याप्तता, ग्रामीण क्षेत्रों में विद्यालयों की कमी, प्रबन्ध समितियों की व्यवस्था इत्यादि।

ये सब कारक विद्यालयों में विभिन्नता उत्पन्न करने के लिए उत्तरदायी है। ये विभिन्नतायें विद्यालय के वातावरण में अन्तर उत्पन्न कर देती है। विद्यालय की भौतिक सुविधाओं की विभिन्नता विद्यालय के मनोवैज्ञानिक वातावरण में भिन्नता उत्पन्न करने के लिए उत्तरदायी है। कोई भी व्यक्ति विभिन्न प्रकार के जैसे– शासकीय, अशासकीय, बालक–बालिका, नगर क्षेत्र, ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों में जाकर वातावरण की भिन्नता का अनुभव कर सकता है।

पुराने और अनुभवी अध्यापक जो शासकीय अथवा अच्छे विद्यालयों में शिक्षा पाये हैं, वे कहते हैं कि विद्यालयों में तब से बहुत परिवर्तन हो गया है जब वे 15–20 वर्ष पूर्व अध्ययन करते थे। इस प्रकार माध्यमिक विद्यालयों से सम्बन्धित व्यक्ति इन विद्यालयों के संस्थागत वातावरण का विभिन्न ढंग से वर्णन करते हैं।

वैज्ञानिक ढंग से, माध्यमिक विद्यालयों के वातावरण को मापने और अध्ययन करने के प्रयास नहीं किये गये हैं इसलिए माध्यमिक विद्यालयों के वातावरण के विधिपूर्वक अध्ययन की अत्यधिक आवश्यकता है। इस प्रकार अध्ययन उन्हें, जो माध्यमिक विद्यालयों से सम्बन्धित है, यह समझने के योग्य बना देता है कि विभिन्न प्रकार के माध्यमिक विद्यालय वातावरण में किस प्रकार से एक–दूसरे से भिन्न होते हैं। यह उन्हें विशेष वातावरणों और उनसे सम्बन्धित कारकों के गुण–दोष निकालने के योग्य बना सकता है। यह अध्ययन प्रकट कर सकता है कि संस्थागत वातावरण की विशेषतायें किस प्रकार से छात्रों के व्यक्तित्व गुणों व शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करती है।

2. अध्ययन की आवश्यकता

शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत शोध कार्य न केवल रीवा जिले वरन् सम्पूर्ण मध्यप्रदेश के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्रों के विद्यालयीन समायोजन का आंकलन कर तथा ऐसे सुझाव शोध कार्य के उपरान्त दिये जा सकेंगे जिनका प्रयोग कर राज्य शासन द्वारा कठिनाइयों को दूर कर विकसित करने पर समर्थ हो सकता है।

समाज के प्रत्येक वर्ग, प्रत्येक तबके का व्यकित अनावश्यक तनाव, अनावश्यक मानसिक उलझन का सामना कर रहा है। यदि कोई व्यक्ति अपने समाज के सदस्यों का प्रचार किये बिना अपनी इच्छा पूरा करते है तो उसके लिये न केवल प्रतिरोध का खतरा उत्पन्न हो जाता है वरन उनके उद्देश्य के पूर्ति मे सहयोग की संभावना नही रहती है। समायोजन की दशा में व्यक्ति किसी लक्ष्य को सामने रख कर कार्य करता है। अतः उसमें सामाजिक मूल्यों, आदर्शो तथा रीति रिवाजों के अनुरूप कार्य करने की प्रवृति होती है। जीवन में अनुकूल व प्रतिकुल दोनों तरह की दशायें आती है तथा प्रत्येक व्यक्ति अपनी क्षमता के अनुसार उनसे समायोजन करता है। कुछ लोग प्रतिकूल परिस्थितयों से अपने को समायोजित नही कर पाते है।

3. उद्देश्य

अतः प्रत्येक क्रिया का कुछ उद्देश्य अवश्य होता है बिना उद्देश्य के विभिन्न प्रकार कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। इन्हीं उद्देश्यों को ध्यान में रखकर शोध कार्य किया जाता है। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में निम्नलिखित उद्देश्य है –

1. रीवा जिले के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं के विद्यालयीन समायोजन के मध्य तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्रों के विद्यालयीन समायोजन के मध्य तुलनात्मक अध्ययन करना।

4. शोध की परिकल्पनाएँ

1. रीवा जिले के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं के विद्यालयीन समायोजन के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्रों के विद्यालयीन समायोजन के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

5. शोध समस्या का सीमांकन

प्रस्तुत शोध कार्य का क्षेत्र जिला रीवा है। इसके अन्तर्गत 9 विकासखण्ड – रीवा, रायपुर कर्चुलियान, नईगढ़ी, हनुमना, मऊगंज, गंगेव, त्योंथर, जवां एवं सिरमौर हैं। अतः जिला अन्तर्गत स्थित माध्यमिक स्तर के विद्यालय सम्मिलित किए गए है।

5.1 समष्टि व प्रतिदर्शः प्रस्तुत शोध अध्ययन में शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्रों के विद्यालयीन समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन हेतु न्यादर्श के रूप में रीवा जिला के रीवा विकासखण्ड से 4 और सभी विकासखण्डों से 2–2 विद्यालय कुल 20 माध्यमिक विद्यालयों का चयन दैव निदर्शन द्वारा अध्ययन हेतु लिया गया। विद्यालयों का चयन करते समय यह विशेष रूप से ध्यान रखा गया कि सभी विकासखण्डों के विद्यालय ऐसे हो जो अपने–अपने क्षेत्र का प्रतिनिधित्व कर सके। शोध कार्य के लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु गहन अध्ययन करने के लिए न्यादर्श के रूप में चयनित विद्यालयों से 500 छात्र एवं छात्राओं (250 छात्र + 250 छात्रा) का चयन दैव निदर्शन पद्धति से किया गया है।

6. अध्ययन विधि

- **सर्वेक्षण अध्ययन विधिः** सर्वेक्षण अनुसंधान का एक महत्वपूर्ण अंग है। इसके द्वारा शोध समस्या के विभिन्न पक्षों से सम्बन्धित आंकड़ों का संग्रहण किया जाता है। आंकड़े मुख्य तथा वर्तमान स्तर का निर्धारण, वर्तमान स्तर की मान्य स्तर से तुलना, तथा वर्तमान स्तर को विकसित करने में महत्वपूर्ण उपादान होते हैं। सर्वेक्षण में व्यक्ति की अपेक्षा तथ्यों, परिस्थितियों तथा गणनाओं को प्राथमिकता दी जाती है।
- **साख्यिकीय विधिः** सर्वेक्षण तथा साक्षात्कार विधि से प्राप्त ऑकड़ो का वर्गीकरण एवं सारणीयन किया गया है। जिनकी व्याख्या एवं विश्लेषण हेतु, सांख्यकीय विधियॉ प्रयोग में लाई गयी है। प्रस्तुत शोधकार्य में परिकल्पनाओं का परीक्षण सांख्यकीय विधियों द्वारा करने के लिये– Mean, प्रतिशत (%), S.D., 't' Test आदि प्रयोग किये गये है, साथ ही गुणात्मक विश्लेषण पर भी ध्यान रखा गया हैं।

7. शोध उपकरण

7.1 विद्यालयीन समायोजन मापनीः शोधार्थी ने अपनी प्रश्नावली के अंतिम चरण में प्रश्नावली के प्रयोग करने सम्बन्धित निर्देश तथा समय आदि का निर्धारण किया। जिसमें प्रश्नो का उत्तर देने की जगह, विद्यार्थी का नाम, कक्षा, लिंग, विद्यालय का नाम आदि को सम्मिलित किया गया। और प्रश्नों का उत्तर किस प्रकार देना है। इन सभी निर्देशों को भी लिखा गया है।

इस प्रकार से मापनी को निर्मित करने के लिए उपर्युक्त 6 चरणों का क्रमबद्ध एवं व्यवस्थित रूप से पालन करके विद्यालयीन समायोजन मापनी के निर्माण कार्य को पूरा किया।

प्रस्तुत अध्ययन में 'विद्यालयीन समायोजन' को मापने के लिए सीमारानी एवं डा0 बसंत बहादुर सिंह द्वारा निर्मित 'एजूकेशनल एडजेस्टमेन्ट इन्वेंटरी' का प्रयोग किया गया है इस मापनी में कुल 30 प्रश्न है। इस मापनी की विश्वसनीयता .96 एवं वैधता काफी उच्च पाई गई।

7.2 प्रश्नावली का प्रशासनः उपयुक्त शोध कार्य में तीनों प्रश्नावलियों का प्रशासन खुद शोधार्थी के द्वारा रीवा जिले के रीवा विकासखण्ड से 4 और सभी विकासखण्डों से 2–2 माध्यमिक विद्यालय कुल 20 माध्यमिक विद्यालयों में से प्रत्येक विद्यालयों के दस गणितीय अक्षमता, दस लेखन अक्षमता और दस पठन अक्षमता वाले कुल 500 विद्यार्थियों (250 छात्र + 250 छात्रा) का चयन किया गया है।

7.3 फलांकनः शोधार्थी ने अपनी स्वनिर्मित विद्यालयीन समायोजन मापनी के उत्तरों को तीन वर्गो (हां, नही व अनिश्चित) में विभक्त किया है। तथा उत्तरदाता ने इन्ही तीनों में से किसी एक पर सही का चिन्ह लगाते हुए अपने प्रश्न का उत्तर दिया है। इसके पश्चात हर एक प्रश्न के लिए उत्तरदाता को अंक दिया और प्रत्येक प्रश्न के लिए अंक इस प्रकार है, हॉ पर 2, नही पर 1 एवं अनिश्चित पर 0 अंक प्रदान किया है और तत्पश्चात उनकी स्कोंरिग की गई। शोधार्थी द्वारा दूसरी मापनी एजूकेशनल एडजेस्टमेन्ट इनवेन्टरी के प्रश्नों के लिए उत्तर देने पर हां पर 2, नही पर 1, एवं अनिश्चित पर 0 अंक प्रदान करते हुए उनकी स्कोरिंग की गई।

8. पूर्व अध्ययन समीक्षा

पूर्ववर्ती अध्ययन से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से सबन्धित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान कोशों, पत्र–पत्रिकाओं, शोध पत्रों तथा अभिलेखों आदि से है, जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के

निमार्ण, अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने तथा कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है इनमें से मुख्य रूप से पाठक, पी.डी (2007)[1], राठौर, योगिता एवं मिश्रा, संस्मृति (2015)[2], सेंगर, बृजेन्द्र सिंह (2013)[3], सिंह, नीतू, लाजवन्ती एवं छविलाल (2022)[4], सिंह, दिनेश (2019)[5], त्रिपाठी, मनीष कुमार एवं डॉ. जय सिंह (2016)[6] ने शोध विधि एवं माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्रों के विद्यालयीन समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन से सम्बन्धित कार्य किये है।

9. रीवा जिले का सामान्य परिचय

जिला रीवा मध्य प्रदेश के उत्तरी–पूर्वी कोने में स्थित है। रीवा का नामकरण नर्मदा नदी के दूसरे नाम 'रेवा' पर आधारित है। रीवा नगर का नाम पहले शायद 'रेवा' रखा गया था। उसी का बिगड़ा रूप अब रीवा बन गया है।

इसके उत्तर में उत्तर प्रदेश के बांदा एवं इलाहाबाद जिले, पूर्व तथा पूर्व–उत्तर में उत्तर प्रदेश का ही मिर्जापुर जिला, दक्षिण में अपने राज्य का सीधी जिला और दक्षिण–पश्चिम तथा पश्चिम में सतना जिला है। इसका आकार लगभग त्रिभुज के समान है। इसका विस्तार 24.18^0 उत्तरी अक्षांश से 25^0 उत्तरी अक्षांश तथा 81.2^0 पूर्वी देक्षांश से 82.18^0 पूर्वी देक्षांश के मध्य है। रीवा जिले का क्षेत्रफल 6287 वर्ग किलोमीटर है।

10. परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या

शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये यह आवश्यक है, कि शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयेाग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाय, निम्नानुसार है–

परिकल्पना क्र. 1: "रीवा जिले के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं के विद्यालयीन समायोजन के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है।"

तालिका 1: रीवा जिले के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं के विद्यालयीन समायोजन का सांख्यिकीय विश्लेषण.

समूह		छात्र	छात्राएँ
समूह की संख्या (N)		250	250
मध्यमान (M)		55.32	54.92
मानक विचलन (SD)		16.85	16.15
क्रान्तिक निष्पत्ति ('t')		0.27	
निष्कर्ष	0.05 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर नहीं है	
	0.01 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर नहीं है	

$df = (N_1-1) + (N_2-1)$

$df = (250-1) + (250-1) = 449+449 = 498$

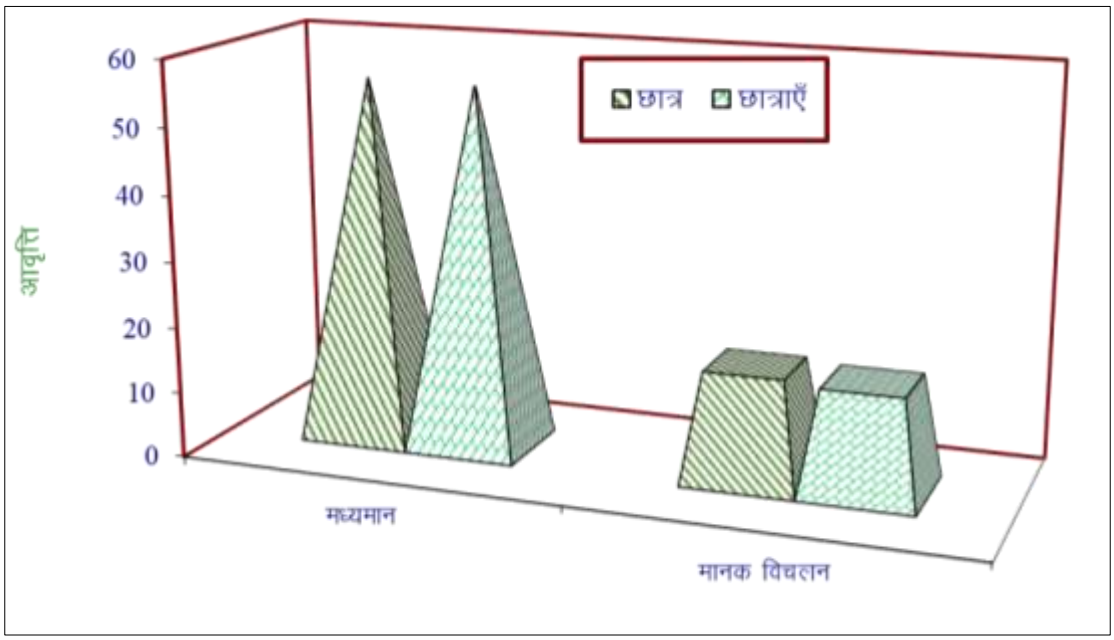

आरेख क्र. 1 : रीवा जिले के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं के विद्यालयीन समायोजन का आरेखीय निरूपण

विश्लेषण एवं व्याख्या

उपरोक्त सारणी एवं आरेख क्रमांक 1 मे न्यादर्श में चयनित रीवा जिले के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं के विद्यालयीन समायोजन से सम्बधित प्रदत्त संकलित किये गये हैं। संकलित प्रदत्त प्राथमिक स्त्रोत पर आधारित है। सारणी में संकलित प्रदत्तों का सांख्यिकीय विश्लेषण से स्पष्ट है कि रीवा जिले के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्रों के विद्यालयीन समायोजन में सार्थकता का औसत उपलब्धि 55.32 है तथा मानक विचलन 16.85 है और छात्राओं के विद्यालयीन समायोजन में सार्थकता का औसत उपलब्धि 54.92 है तथा मानक विचलन 16. 15 है।

498 df पर सार्थकता के लिए 't' का मानक मान 0.01 विश्वास स्तर पर 2.33 तथा 0.05 विश्वास स्तर पर 1.64 है, जबकि अध्ययन से प्राप्त 't' का मान 0.27 है, जो कि दोनो विश्वास स्तरों के मानों से कम है। इसलिए निर्धारित शून्य परिकल्पना स्वीकृत हो रही है।

परिकल्पना क्र. 2: "शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्रों के विद्यालयीन समायोजन के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है।"

तालिका 1: शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्रों के विद्यालयीन समायोजन का सांख्यिकीय विश्लेषण.

समूह		शहरी क्षेत्र	ग्रामीण क्षेत्र
समूह की संख्या (N)		250	250
मध्यमान (M)		44.25	40.08
मानक विचलन (SD)		12.05	11.68
क्रान्तिक निष्पत्ति ('t')		3.93	
निष्कर्ष	0.05 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर है	
	0.01 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर है	

$df = (N_1-1) + (N_2-1)$
$df = (250-1) + (250-1) = 449+449 = 498$

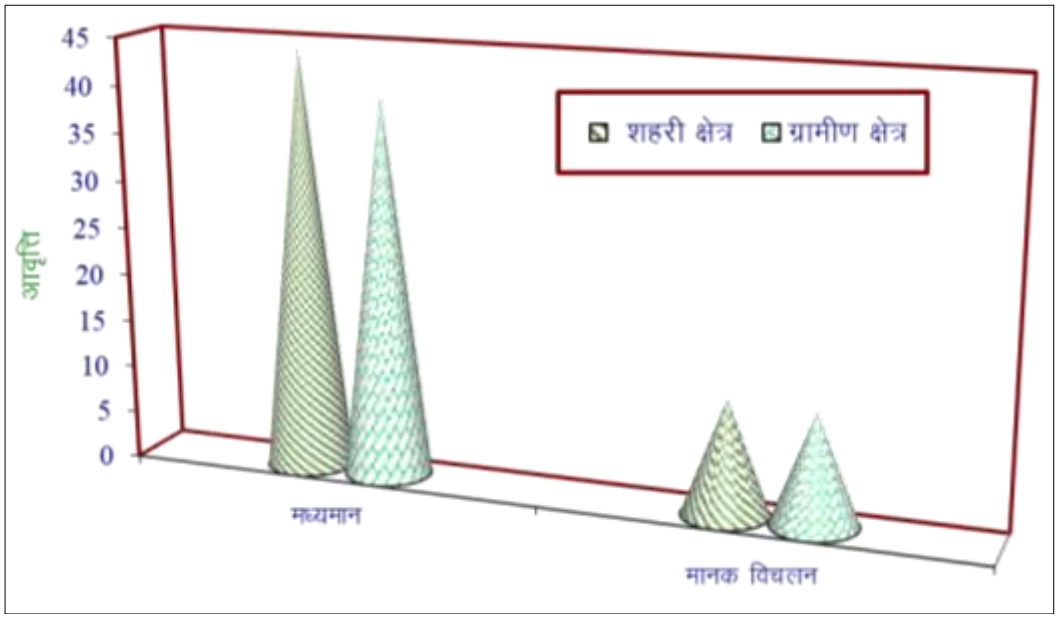

आरेख क्र. 2 : शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्रों के विद्यालयीन समायोजन का आरेखीय निरूपण

विश्लेषण एवं व्याख्या

उपरोक्त सारणी एवं आरेख क्रमांक 2 मे न्यादर्श में चयनित शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्रों के विद्यालयीन समायोजन से सम्बधित प्रदत्त संकलित किये गये हैं। संकलित प्रदत्त प्राथमिक स्त्रोत पर आधारित है। सारणी में संकलित प्रदत्तों का सांख्यिकीय विश्लेषण से स्पष्ट है कि शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्रों के विद्यालयीन समायोजन में सार्थकता का औसत उपलब्धि 44.25 है तथा मानक विचलन 12.05 है और ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों के विद्यालयीन समायोजन में सार्थकता का औसत उपलब्धि 40.08 है तथा मानक विचलन 11.68 है।

498 df पर सार्थकता के लिए 't' का मानक मान 0.01 विश्वास स्तर पर 2.33 तथा 0.05 विश्वास स्तर पर 1.64 है, जबकि अध्ययन से प्राप्त 't' का मान 3.65 है, जो कि दोनो विश्वास स्तरों के मानों से अधिग है। इसलिए निर्धारित शून्य परिकल्पना अस्वीकृत हो रही है।

11. निष्कर्ष

- रीवा जिले के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं के विद्यालयीन समायोजन के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- शोध क्षेत्र के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्रों के विद्यालयीन समायोजन के मध्य सार्थक अन्तर पाया जाता है।

12. सन्दर्भ ग्रंथ

1. पाठक, पी.डी (2007) – भारतीय शिक्षा और उसकी समस्यायें इक्कीसवाँ संस्करण, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा.
2. राठौर, योगिता एवं मिश्रा, संस्मृति (2015) – ग्रामीण विद्यार्थियों के मध्य सामाजिक बुद्धि एवं समायोजन के आधार पर का तुलनात्मक अध्ययन, International Journal of Multidisciplinary Research and Development. 2015;2(2):434-436.
3. सेंगर, बृजेन्द्र सिंह (2013)– किशोरों की सांवेगिक बुद्धि का उनकी शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन के प्रभाव का अध्ययन : अप्रकाषित लघु शोध प्रबन्ध, छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर।
4. सिंह, नीतू, लाजवन्ती एवं छविलाल – माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के समायोजन पर संवेगात्मक बुद्धि के प्रभाव का अध्ययन, Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika, 2022, IX(XII).
5. सिंह, दिनेश (2019) – स्नातक स्तर के छात्र छात्राओं की चिंता, समायोजन क्षमता एवं मानसिक स्वास्थ्य का शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन, शोध प्रबन्ध (शिक्षाशास्त्र), नेहरू ग्राम भारती प्रयागराज.
6. त्रिपाठी, मनीष कुमार एवं डॉ. जय सिंह (2016) – "रीवा संभाग में हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार का उनकी शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन" International Journal of Advanced Educational Research. 2016 September;1(5):48-50.